Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

'किसी दामिनी का न हो दमन'

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

'किसी दामिनी का न हो दमन'

Dr. Mahavir Singh Khatkar

Hindi Lecturer, Haryana College of Education, Kinana (Jind)

औरत जगजननी मानी जाती है औरत चाहे तो देवी, लक्ष्मी व माँ सरस्वती का रूप धारण कर ले और संहार पर उतारू हो जाए तो दुर्गा व महाकाली बन जाएं दरअसल औरत ममतामयी माँ, स्नेहमयी पुत्री और कुशल गृहिणी सहित अनेक रूपों में अपने दायित्व को निभाती है इस तरह बिना औरत के इस विश्व की कल्पना नही की जा सकती इस शोधपत्र का मुख्य उदेश्य नारी की पीड़ा को उजागर करके उसके सम्मान में विश्व–कल्याण कान्ति का उद्‌बोधन करना है।

यदि इतिहास को दृष्टिगोचर किया जाए तो इसे पद–पद पर पति श्रापित होकर अहिल्या रूप में पत्थर रूप धारण करना पड़ा तथा अग्नि परीक्षा देकर भी धोबी के प्रवाद के कारण राज्य से सीता रूप में गर्भावस्था में निष्कासित होना पड़ा और इसी नारी ने रानी लक्ष्मीबाई के रूप में अपनी ममता पर आघात होने पर स्वराज्य को कायम रखने के लिए दुर्गा रूप धारण करके दुश्मनों से लोहा मनवाया तथा द्वापर युग में मादरी के रूप पति धर्म का पालन करते हुए पति के साथ सती हुई हम ये कैसे भूल सकते हैं कि कौशल्या न होती तो मर्यादा पुरूषोत्तम राम कैसे जन्म लेते इसी भांति देवकी माता न होती तो सुदर्शन चक्रधारी श्री कृष्ण का भी असतित्व नही होता, कुन्ती न होती तो अधर्म संहारक अर्जुन तथा धर्मपरायण युधिष्ठिर न होते लेकिन लड़कियों को आज से नही सदियों से अपमान सहना पड़ रहा है चाहे अर्जुन की पत्नी द्रोपदी के रूप में दुशासन जैसे दनुज ने चीरहरण किया परन्तु रक्षक के रूप में श्री कृष्ण ने लाज बचाई परन्तु आज रक्षक कोई नही।[1]

आज तो यांत्रिक मशीन से उन कलियों को खिलने से पहले ही गर्भ में मरवा दिया जाता है। यह विडम्बना ही है कि जिस राज्य की बेटी अंतरिक्ष परी कल्पना चावला ने मानवहित के लिए स्वंय की आहूति दे दी, विश्व पर्वतारोही संतोष यादव व ममता सौधा ने मांउट एवरेस्ट की ऊँचाई को बौना साबित कर दिया हो उस प्रदेश में भी कन्या भ्रूण हत्या का सिलसिला बदस्तूर जारी है। आज इसी प्रदेश का लिंगानुपात एक हजार के पिछे महिलाओं की संख्या 877 हैं जो कि चिंता का विषय है।[2]

गीता जंयती समारोह दिसम्बर, 2012, कुरूक्षेत्र को धर्मनगरी कहा जाता है लेकिन इस समारोह में स्वास्थय विभाग द्वारा जो बेटियों के बारे में आंकड़े पेश किए गए काफी चिंताजनक है। इस साल नवम्बर महिने में कुरूक्षेत्र जिले में 9493 लड़को तथा 7557 लड़कियों ने जन्म लिया नतिजा यह हुआ कि 11 महिनों में लड़को की अपेक्षा 1936 लड़किया कम पैदा हुई जिससे विभाग ने भी मान लिया है कि यह लड़कियों की कमी बेटियों को गर्भ में ही मरवाया गया यह कैसी विडम्बना है धर्मनगरी कहे जाने वाले कुरूक्षेत्र जहाँ द्वापर में श्री कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया तथा धर्म का ज्ञान कराया तथा धर्म तथा सत्य का साथ देकर अधर्म का नाश किया उसी धर्मनगरी में इतना अधर्म पनप रहा है जो भविष्य को अन्धकारमय होने के संकेत दे रहा है।[3]

इसी तरह आधुनिक समय में दृष्टिगोचर होता है महिलाओं के प्रति अपराधों के कारण हरियाणा प्रदेश इस वर्ष–2012 राष्ट्रीय फलक पर सुर्खियों मे रहा शासन तन्त्र मूक तथा लाचार दिखाई देता है इस वर्ष इस प्रदेश में महिलाओं के प्रति 5091 अपराध हुए जिनमें दुष्कर्म के 577, यौन उत्पीड़न के 490, अपहरण के 622, अनैतिक कार्य के 57 तथा दहेज हत्या के 236 मामले शामिल हैं। महिलाएँ बाहरी परिवेश के साथ–साथ घरेलू प्रताड़ना का शिकार भी हुई हैं अपने ही घर में उत्पीड़न के 2500 से अधिक केस सामने आए है। जीन्द के गाँव सच्चाखेड़ा काँड में हरियाणा की युवती द्वारा आत्महत्या कर लिये जाने के कारण राष्ट्रीय स्तर पर शर्मशार होना पड़ा उसी तरह एयर होस्टेस गीतिका शर्मा आत्महत्या कांड में गृह राज्य मंत्री गोपाल कांडा के कारण प्रदेश के मुख पर कालिख पुत गई तथा 8 वीं कक्षा की छात्रा गाँव संडवा जीप में सवार युवको ने अपहरण करके जीप को गाँव में घुमाते हुए दुष्कर्म किया तथा हिसार जिले में डाबरा गाँव की किशोरी से सामूहिक दुष्कर्म हुआ घटना से क्षुब्ध पिता ने आत्महत्या कर ली। क्या चारो तरफ दुशासन के वंशज फलफुल रहे हैं।[4]

19वीं ओर 20 वीं सदी में हुए समाज सुधार आंदोलन का भी लक्ष्य हिन्दू समाज में कमियों का स्वीकार करने की इच्छा शक्ति पैदा करना था इसके उपाय का सवाल तो इस स्वीकारोक्ति के बाद ही उठता था राजा राममोहन राय व स्वामी विवेकानन्द आधुनिकतावादी समाज सुधारक थे ओर पश्चिम की वैदिक संस्कृति से जुड़े थे लेकिन ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे समाज सुधारक परम्परावादी ही थे और सुधारों को माननीय नजरिये से पेश करने वाले थे हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि पिछली दो सदियों के हिन्दू पुरोधाओं में भी यह स्पष्ट समझ थी कि हिन्दू व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से पूर्णता के प्रतीक नही थे आज के संदर्भ में यह मानकर चले कि बाहरी दूनिया के सम्पर्क में आने से 'इंडिया' निवासियों का दिमाग दूषित हो गया और उनका रवैया महिलाओं के प्रति असहज तथा अनैतिक हो गया मगर समाज को राह पर लाने के लिए आखिर कया किया जाए? आखिर हिन्दूओं में भी बेहद खामियाँ रही होगी। जिससे उन्होने स्त्री विरोधी रवैये को बढ़ावा दिया।[5]

आधुनिक संदर्भ में देश की राजधानी में दामिनी नामक युवती से चलती बस में जो सामूहिक दुष्कर्म हुआ तथा बाद में अमानवीय व्यवहार किया गया जिससे आहत लड़की ने विदेशी जमीन पर उपचार के दौरान दम तोड़ दिया जिससे राष्ट्र (भारत) सारे विश्व के सामने शर्मसार हो गया देश भर में आंतरिक विद्रोह हो गया लोग हत्यारों को सजा दिलाने हेतू सड़को पर उतर आये सारा देश उस लड़की की मृत्यु पर नम हो गया आज हम बुत

www.ignited.in

बने खड़े है तय नही कर पा रहे है कि दिल्ली की घिनौनी घटना को दोष किसके सिर मढ़े कभी शासन तन्त्र तो कभी पुलिस तन्त्र तो कभी अपराधियों के मनोविज्ञान ओर अन्ततः उलझ कर लाचार रह जाते हैं।[6]

इसी तरह राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने असम के सिलचर में कहा था कि दुष्कर्म की घटनाएँ 'इंडिया' में ही होती हैं भारत में नही यदि ध्यान से देखा जाए तो आंशिक रूप से सही है क्योंकि महिलाओं का शोषण भारत की परिस्थितियों में सदियों से घुला है जो बुरी तरह फैला हुआ है उनका कहना पूरी तरह सही है कि महिलाओं के प्रति सम्मान की आदर्श स्थिति भारतीय संस्कृति में ही विराजमान है। वे स्वीकार करते हैं कि परम्परागत समाज अपने दायरे से बाहर के लोगों को स्वीकार नही कर पाता।[7]

निष्कर्षः–

इन परिदृश्यों को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते है कि यदि हम अब भी नही बदले तो फिर मौका नही मिलेगा हमें अपनी मानसिक सोच को बदलना होगा प्रत्येक माँ को अपने बेटो से दुसरों की बेटियों के प्रति सम्मान अपनी बहन जैसा सिखाना होगा हमें उस सोच को बदलना होगा जिससे हम लड़कियों की परवरिश ऐसे करते हैं कि आगे चलकर भी वही कभी पुरूष की बराबरी कर पाने में खुद को सक्ष्म महसूस नही करती हम इन घटनाओं में अधिकतर इस निष्कर्ष पर पहुचँते हैं कि उन लड़कों की परवरिस में माँ–बाप द्वारा खामियाँ रही हैं इन अपराधों के पिछे समाज का दोष छिपा है जब हम लड़की को कुछ संस्कार देते हैं तो लड़के को कुछ भी करने की आजादी देते है। अधिकतर घटनाओं में रिस्तो पर कंलक उठते रहे हैं अपने संगे भी यहां तक की बाप भी रिस्तों को तार–तार करते रहे हैं। जिसका मुख्य कारण हमारे मानवीय मूल्यों में ह्रास मार्यादाहीन एंव मानसिक विकारों से दुषित समाज हैं जो कहीं न कहीं विदेशी संस्कृति के प्रभाव से दुषित है। इसके साथ–साथ बहुत से पाठक एंव परम्परागत व्यक्ति लड़कियों की उस अंग–परोस अथवा कम कपडों को भी कुछ हद तक जिम्मेवार मानता रहा है, जो कुछ हद तक सही भी है क्योंकि हमारी संस्कृति नारी को लज्जा उसका गहना मानती रही है तथा सुन्दरता सभ्य वस्त्रों में ही सजती हैं। हमें बच्चों की उम्र को ध्यान में रखते हुए आए भावनात्मक बदलावों के अनुसार परवरिश करनी चाहिए उन्हे आधुनिकता तथा उन्मुकता के अंतर को समझायें अतः हमें अपने भविष्य को सुखद रखने के लिए नारी को सम्मान देना होगा क्योंकि नारी करूणा, त्याग एंव प्रेम की मूर्ति है उसके बिना समाज अधूरा है, वह भोग्या नहीं जन्मदायिनी है।

संदर्भः–

1. कलियों को खिलने दो –दैनिक जागरण 7 जनवरी, 2013
2. कलियों को खिलने दो––––––––––––––––––––
3. जाने कहां चली गई 1936 लड़कियाँ– दैनिक जागरण 21 दिसम्बर, 2012
4. महिला अपराधों पर सुर्खियों में रहा हरियाणा– जागरण सिटी 26 दिसम्बर, 1912
5. भूला बिसरा एंजेडा–दैनिक जागरण 7 जनवरी, 2013
6. किसी दामिनी का न हो दमन– दैनिक जागरण संगिनी 5 जनवरी, 2013
7. भूला बिसरा एंजेडा– दैनिक जागरण 7 जनवरी, 2013